पाठ 17. अनचाहे मेहमान

पाठ की भूमिका

इस पाठ का उद्देश्य बच्चों में विवेचनात्मक सोच संबंधी कौशल विकसित करना है ताकि वे अपने अनुभवों का सकारात्मक मूल्यांकन कर सकें। यह हास्य-कहानी है जिसमें अनचाही परिस्थितियों से निपटने का वर्णन किया गया है।

पाठ का सार

वैसे तो अतिथि को भगवान का रूप माना जाता है, परंतु एक सीमा से अधिक दुखदायी हो जाता है। पंडित रमादीन लोगों को अपने यहाँ बुलाते तथा अच्छा-अच्छा भोजन खिलाते। उनकी पत्नी उनकी इस आदत से बड़ा परेशान रहती। एक दिन उसने अनचाहे मेहमानों से छुटकारा पाने की सोची। तीन मेहमान घर पर आए हुए थे, अचानक पंडिताइन उनके सामने मूसल पर लाल चंदन का टीका लगाने लगी। मेहमानों ने इसका कारण पूछा तो पंडिताइन ने जवाब दिया कि पंडित जी मेहमानों के रक्त से ही पूजा-अर्चना करते हैं। इतना सुनते ही मेहमान भाग खड़े हुए। इसके साथ ही पंडिताइन को इस मुसीबत से छुटकारा मिल गया। यह लोककथा अपने अंदर हास्य-रस लपेटे हुए है।

अध्यापन संकेत

- **मूल पाठ के लिए संकेत**

  पाठ में हास्य भी है और व्यंग्य भी। पाठ का मौन व मुखर वाचन करवाएँ। ओखली-मूसल की उपयोगिता बताएँ। अच्छे पड़ोसी के गुण बताएँ। पंडित जी के स्वभाव व उससे होने वाली परेशानियों की चर्चा करें।

- **अभ्यास प्रश्नों के लिए संकेत**
  - **मौखिक प्रश्नों, पहेलियों, पठित परिच्छेद** व **पाठ आधारित प्रश्नों** के अध्यापन संकेत हेतु **पृष्ठ संख्या 42** देखें।
  - मुहावरों की चर्चा पहले की जा चुकी है। पाठ से हटकर अन्य मुहावरे और उनके प्रयोग के बारे में चर्चा करें।
  - लिंग बदलने में शब्द के रूपों में होने वाले परिवर्तन की ओर ध्यान आकृष्ट करें।
- **क्रियाकलाप के लिए संकेत**
  - कहानी बनाना भाषा संप्रेषण की दृष्टि से अच्छा क्रियाकलाप है। इससे कल्पनाशीलता का विकास होता है। बच्चों को इस क्रियाकलाप में अपेक्षित सहयोग दें।